

DPN 5961

Title : मन्त्र जन्त्र वासः सफू MANTRA TANTRA WASAH SAPHU

Run. No. 6652

Cat. No.

Micro. No.

Subject मन्त्र व चिकित्सा

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /
✓ Mantra and medicine

Size in cms. 20.5 x 6

Folios 14

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Phanindra Ratna Vajra Acharya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : मन्त्र चित्रादौ

yantra diagrams included

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

5
(कंठं गुणुनीशाखं

(कंठं सदनं नृकं

(नृयकसनं कसनं

(धनमरुतं विद्यया नैतसधय

धनं आगमसधमो विधस

धर्ममातमभयाकोरु ॥

(धयगु, नंदकाचं, नृयकं भन

(काधयनं, आनं, नगनाय,

(चोन्नम, धृतिं समतागयाद

गधमकय, सुद्वेकाडसिद्धि

धडोर्ग ॥

(कटीगमास, कवदानुकीड सन

वयो, आनं कस, सनसी स, स

गकास गुमुनी ससिनी साष

नगहन विद्य, गगतातसा, ध

धंयधतसिद्धिनामो ॥

(धनययुक्तं, नमिस, सिन

धमनो, मङ्गलमास, गुनन

सिद्धास, ससिसि, धरं गुका

कंठि साधनतन विद्य ॥

समतानया ॥ ५ ॥

(गोतगु, नकं वगु, कानक

धेनतगमृध, सिधय, वि

नलो मकं नैत्ययानधय ॥

(सिद्धिगुणुआइ, शाधध, कंठ

म, धवजान, नृकं स, नृकं ॥

धनी सधमराग मयग धधध

न, कं स, दृष्ट, सिद्धिध सधध

ना ॥

नारायणमनु॥ ॐ श्रीं ४ महा माया ४ महा मज्जस्ये नमः ॥ च वं या यधिकारु वा मानादि
गिष्ठ न निवृत्त न च वगा हं का न मृदु ह न मनु मया वरु न मचक मा मा म न मा न
स्वगी वा भी त रु न मा म ग य द व म् थ्या वि मि थ्या मि स मा म ४ मज्जस्ये म मा रु व
ती मि ॥ अथ र व म् म य ॥ मृ जा की न र या थ्या व या ॥ अ म गि र म च व ॥ हि ह
मा न स्व र स थि ४ यि व स का रि म कि र ॥ च रु व ४ र ज को न वृ त्त य म् वि वा य य
त ॥ अ व ध ४ य त्रि का मा ने म न म द गि ना म् वी ४ मा म मा मा नु य य ४ न व नी

या थ्या नू रु मां ॥ म मा मा य थ्या न सा का वी गो य थ्या रु व न ॥ म न का कि स ति था
मा जा य न म य न म न म म ग य न रु क रु थ्या वि चि न्ना रा व गे क य ॥ ॐ मि म हा म
न स्व गी सा ध न ॥ ॥ २ ॥ न म स न स्य वी य वी क वि थ्या ना वि द क स यो ज च द न
क रं तं न म म ग यो न रु क रु थ्या वि चि न्ना रा व गे क य ॥ का न वी ज य वी द
न न का रु द न क म न स्व वी ज ग रु ॥ न त्थ त्रि द मी रु ग व नी ॥ व ज स न स्व गी
० नि म् रु वा रु जा स र्व वि न्नी कि न य मा नी न सो न न कि द य म त्वं रु क

ली, धनद फि लफ ना, कया न, जल, चक लानि कया यल्या सोठ यदा कमात्री
नवथा वनवगो, नाना सक्का सधनां कदया थिथि विनका ऊनय प्रथक प्रथम सफामा
मान मिहाय, **ॐ यिप्रश्नयुक्ता वदति, कस्तम आ वदति, यिप्रश्न वदति निसा**
ला ॥ ॐ हिमकुंज यात ॥ वज्र सत्र स्वकि साधन ॥ ॥ ॐ नभा वज्र सत्र स्वथ ॥ श्री
गीर्वाण गजपट्ट मूर्ति नमो नमो कला कामदो वया जमन ॥ जल्यतम ४ समयिती सा
कृतिग, सत्र स्वकि यं के कि, सायद गं समा सन गत्या ४ साधन मचर गिग धुकिनी

वज्रयज्जसर्वदगता। स्थन शुचो म ३ ना ३ वनिष वृत्ता दग मसन ॥ यदथा १२
यकर्मो वधाय सन्या कया नृग ४ दयायुता वा सवालो कृगया धिथि । कद्यु जथा स्व
प्रसायाय म विप्र मस्विर्त क सथ रुग ४ ॥ कच्चु वीज । कि प्रलेनूयानी गत थो गतान
॥ सम्यक् कयाय मस्विर्त दिने दिपदिना मय ४ ॥ गग ४ युनन क नर्त युगि स्त्राय विधाय व
प ६ ॥ नूमादनी गच्च सम्याथीय विधाय मय ४ ॥ जल गेय चै ग जर्त यय यावा विमयद
४ ये मय ४ ॥ आत्मानदाग रा वन सर्वरूप निवदय ४ ॥ मगादि रा वना भव कया

द्वयादिभानयनकवदसदर्थवोजगरैतिवमिति॥सर्वोभायदनाहामिमीगांशुयुठ
 साहूनायमाचदासनासीनविक्रययैकभासिती॥मृद्वचसंवरुमीमयीमल्लंभन
 सकृत्गी॥उमिन्नायुषवाजीवनाजसयकप्रशिर्य॥त्रिकुलपथमोहायप्रकोष्ठाभा
 जसचदं॥युष्मायाप्रिमिगांराखदामयातिमयायुही॥द्वित्रयसवाकावीसिकव
 भूस्वनामथीचदुवीजादिनिष्पन्नायगादायसचस्वनी॥हृदिमूढिकारिमारुमिड
 मधुसमथागां॥सनावाद्यविधयायविडनादयप्रिस्तुत॥सद्वक्त॥सुचइदासदास

सज्जिवोरुधिरविभुगी॥वीजभकासगिवामिवसमचय॥मनुज॥कानादिरिवाक
 कवीदियसाधनायाय॥स्यवयनितजावदवमयुयातिमंयुसाधयलुइनु॥समा
 मायगानिष्ठाईजिनानीमूक्तिमूढरुत॥अथिदीजंसचयमन्त्रोक्तयथागादहति
 गं॥समासाखासत॥युष्मययैकमाधिराकृति॥सयवागारुथागनसवंगम
 सुवकाविद॥यानादयकविदमुजयैकयैदिनचयी॥नारीगानिनिवीजा
 कुवधूनीनिगमागमाक॥युक्ताद्विहर्तुगयमथस्तसादहुमिमिमैकम॥मूक

नलाकुरुं हर्मसर्वदशासनात् ॥ डययूयप्रवृत्तामां वधूनां मधुवाहिनाः
आहलिमकुमासावेनं विनी ॥ वैकोजजव न कुरुष्वो रुमादो निवगयन ॥ ना
हिमस्थसवीजसासिद्धस्य यदो कर्तव्यवसमाधिमानस्य जयसकमना देवा

४५.

मन्त्र जन्त्र वासः सफु

परागीन्द्रल वजाचार्य

गहाहिकायनस इथर्हनीयकाठोठनन सकयाय संकली यायनद्रयक इयुग
यईकाककुहनि वहुनी दवदरे काकनरुकाययखाहा ॥ थमक सैयद्वन
सकाखया नगनसहि कायावडाया यायावर्त बीयावला कया विष्टसथुहाव
कवडाकडा काखनहाय ॥ गिमखात्रयाहा लाकानस निडादयका ॥
॥ यथा नरु कुकुरु काय कटकायाहान माठसकय खरुनयाहान गहाकयवय
कययसयाहा कुरुसकय थकनयाजारी कान डरुनखयाज मवुनयाहा
गमकय यात्रसकय कडाव ॥ ॥ यथनीधया कयाधी मयाकनसकय हात्र

ॐ ह्रीं का न ह्रीं २ ह २ हा २ हू स मा त्रीं कौं ठ न सीं क ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॥ य न मा त्रीं विद्या के द न ॥ ॥

॥ ॐ व ह्रु म हा श्रीं व न विद्या के द न ॥

ॐ आ व ह्रु क ह्रीं त ह्रीं ना ग न व वा य य २ ह्रीं जा कि नो जा न स म्ब संह र स्था हा ॥ ना ग य जा म रु ॥ ना ग
य थ स्था य म रु ॥ ॥ ॐ वे जे ॥ ॥ ॐ कुं व रु कुं मु मि नि २ स्था हा ॥ कुं मु म रु रु ना ग म्ब ॥ ॐ व रु
कुं व रु रु २ ह २ वा ट वि द्य ग म ड वा द य ह्रीं ह्रीं ॐ डा म रु ॥ ना ग म्ब ॥ ॥ न व य व रु ना न व रु
२ ॥ ॥ य थ म य वा य वे ग रु वा न स्था ट य म्ब ना त सा र्थ य वि द्यु हा सा ह्रीं ह्रीं ॥ य थ म २ स र्व व

ना स मि स वा न ना ग य २ स र्व ना ग वा ना न य रु न २ व रु कुं मु न आ व ट य म ड स्था ना ग न ग रु २ म रु
ग रु कुं व ह्रीं ह्रीं ॥ मि न व ना का न रु रु य २ मि न वा य म्ब वा स र्व ना ग वि द्य व नि ह्रीं ह्रीं ॥
मि टि २ ह्रीं ह्रीं रु रु रु रु रु स र्वो सौं ती न थ ग ना धि स्था ने न ह्रीं ह्रीं ॥ अ म रु अ म रु रु व
नि स र्व सौं कू वे न वा य म्ब वा स ति ह्रीं ह्रीं ॥ मू वा दि य रु वा य न ॥ ग रु का ध म हा वे ग र्व व
य वा यु व ना रु का न टी टी २ ह्रीं ॥ रु रु य व ना त म ती ना र्थ ग म वि दि २ ह्रीं ह्रीं ॥ स्था हा ॥
॥ ॥ गुरु ॥



[illegible]

10

5

0 cms

5

10

15

20



The diagram is a circular sacred geometric figure, possibly a Sri Yantra or a similar form. It consists of a central circle with a red border, containing the letter 'Om'. This central circle is surrounded by a ring of 16 smaller circles, each containing a letter. The entire diagram is enclosed within a larger circle with a scalloped border. The background is a textured, aged paper with some handwritten text in Devanagari script visible around the edges.